

आलस्य और अलबेलापन - 9

अव्यक्त बापदादा :- (04. 03. 1972)

➡ _ ➡ जो साहस रखने वाले उन्हीं के साथ बाप सदा सहयोगी है, इसलिए कभी भी साहस को छोड़ना नहीं। हिम्मत और हुल्लास सदा रहे। हिम्मत से सदा हर्षित रहेंगे। हुल्लास से क्या होगा? हुल्लास किसको खत्म करता है? आलस्य को। आलस्य भी विशेष विकार है। जो पुरुषार्थी पुरुषार्थ के मार्ग पर चल पड़ा हैं उन्हीं के सामने वर्तमान समय माया का वार इस आलस्य के रूप में भिन्न-भिन्न तरीके से आता है। तो इस आलस्य को खत्म करने के लिए सदा हुल्लास में रहो। कमाई करने का जब किसको हुल्लास होता है तो फिर आलस्य खत्म हो जाता है। अब भी कोई कार्य प्रति भी अपना हुल्लास नहीं होता तो फिर आलस्य जरूर होगा। इसलिए कभी भी हुल्लास को कम नहीं करना है जो आलस्य के वश होकर और श्रेष्ठ कर्म करने से वंचित हो जाओ।

➡ _ ➡ आलस्य भी कई प्रकार का होता है। अपने पुरुषार्थ में आगे बढ़ने में आलस्य बहुत विघ्न रूप बन जाता है। यह जो कहने में आता है-अच्छा, सोचेंगे, यह कार्य करेंगे-कर ही लेंगे, यह आलस्य की निशानी है। करेंगे, कर ही लेंगे, हो ही जायेगा, लेकिन नहीं करने लग पड़ना है जो नालेज वा धारणायें मिली हैं वह बुद्धि में धारण तो की हैं ना। लेकिन प्रैक्टिकल में आने में जो विघ्न रूप बनता है वह है स्वयं का आलस्य

➡ _ ➡ अच्छा, कल से लेकर करेंगे, फलाना करे तो हम भी करेंगे, आज सोचते हैं कल से करेंगे, यह कार्य पूरा करके फिर यह करेंगे-ऐस-ऐसे संकल्प ही आलस्य का रूप हैं। जो करना है वह अभी करना है। जितना करना है वह अभी करना है। बाकी करेंगे सोचेंगे-इन अक्षरों में पिछाड़ी में 'ग-ग' आता है ना, तो यह शब्द है बचपन की निशानी। छोटा बच्चा ग-ग करता रहता है ना, यह अलबेलेपन की निशानी है। इसलिए कब भी आलस्य का रूप अपने पास आने न देना और सदा अपने को हुल्लास में रखना। क्योंकि निमित्त बनते हो ना। निमित्त बने हुए सदैव पुरुषार्थ के हुल्लास में रहते हैं तो उन्हें देख और भी हुल्लास में रहते हैं। चलते-चलते पुरुषार्थ में थकावट आना वा चलते-चलते पुरुषार्थ साधारण रफ्तार में हो जावे, यह किसकी निशानी है? विघ्न न हो लेकिन लगन भी श्रेष्ठ न हो तो उसको भी आलस्य कहेंगे। कई ऐसे अनुभव करते हैं -विघ्न भी नहीं हैं, ठीक भी चल रहे हैं लेकिन लगन भी नहीं है अर्थात् हुल्लास वा विशेष कोई उमंग नहीं है। तो यह भी निशानी आलस्य की है। आलस्य भी अनेक प्रकार का है।

➡ _ ➡ इस आलस्य को कभी भी आने न देना। आलस्य धीरे धीरे पहले साधारण पुरुषार्थी बनायेगा वा समीपता से दूर करेगा; फिर दूर करते करते धोखा भी दे देगा, कमजोर बना देगा, निर्बल बना देगा। निर्बल वा कमजोर बनने से कमियों की प्रवेशता शुरू हो जाती है। इसलिए सदैव यह चेक करना-मेरी बुद्धि की लगन बाप वा बाप के कर्तव्य से थोड़ी भी दूर तो नहीं है, बिल्कुल समीप वा साथ-साथ है?

➡ _ ➡ आजकल के जमाने में कोई किसका खून करता है वा कोई भ्रष्टाचार का कार्य करता है तो पहले उनको दूर भगाकर ले जायेगा। उनको अकेला, कमजोर बनाकर फिर उस पर वार करेगा। तो माया भी चतुर है। पहले सर्वशक्तिवान बाप से बुद्धि को दूर करती है, फिर जब कमजोर बन जाते हैं तब वार करती है। कोई भी साथ नहीं रहता है। क्या भी हो जाये -अपनी बुद्धि को कभी बाप के साथ से दूर न करना। जब किसका वार होता है तो उनसे कैसे अपने को बचाने लिए चिल्लाते हैं, घमसान करते हैं जिससे कोई दूर न ले जा सके। यहां फिर जब देखो कि माया हमारी बुद्धि की लगन को बाप से दूर करने की कोशिश करती है तो अपने अन्दर बाप के गुण गाने हैं, महिमा करनी है। महान! कर्तव्य करने लग जाओ, चिल्लाओ नहीं।

➡ ➡ ➡ भक्ति में भी गुणगान करते हैं ना। यह यादगार भी कब से बना? यह मन्सा का गुणगान करना वाचा में ला दिया है। यथार्थ रीति से गुणगान तो आप ही कर सकते हो ना। अब यथार्थ रूप में मन्सा संकल्प से, स्मृतिस्वरूप में गुणगान करते हो और भक्ति में स्थूलता में आते हैं तो मुख से गाने लग पड़ते हैं। सभी रीति-रसम शुरु तो यहां से होती हैं ना। तो गुणगान करने लग जाओ। अपने को अधिकारी समझ सर्वशक्तियों को काम में लाओ। फिर कब भी माया आपकी बुद्धि की लगन को दूर नहीं कर सकेगी। न दूर होंगे, न कमजोर होंगे, न हार खायेंगे। फिर सदा विजयी होंगे। तो यह स्लोगन याद रखना कि हम अनेक बार के विजयी हैं, अब भी विजयी बनकर ही दिखायेंगे। जो अनेक बार के विजयी हैं वह अभी फिर हार खा सकते हैं क्या? कभी नहीं। हार खाना असम्भव अनुभव होना चाहिए।

➤➤ हिम्मत और हुल्लास

➡ ➡ ➡ हिम्मत

- हिम्मत से सदा हर्षित रहेंगे
- हिम्मत को कभी नहीं छोड़ना है

➡ ➡ ➡ हुल्लास

- आलस्य को खत्म करता है
 - आलस्य भी विशेष विकार है
 - हम आलस्य को विकार के रूप से नहीं देखते
 - किसी सेवा के प्रति इच्छा नहीं होना

➡ ➡ ➡ हुल्लास की कमी के कारण

- ज्ञान की कमी
 - ज्ञान और योग की गहराई का रस नहीं मिलने से उदासी आ जाती है
 - तीव्र पुरुषार्थ की कमी
 - ज्ञान की गहराई में जाना है, खाली पढ़ने, लिखने से नहीं होगा
 - ज्ञान और योग में समान आनंद प्राप्त होना है
 - जो रस योग के अशरीरीपन में अनुभव हो वही ज्ञान का मनन करते हुए भी हो
 - इस आनंद की अवस्था में जो आंतरिक खुशी है उसमें उमंग उल्लास स्वतः आ जाता है
-

➤➤ आलस्य :-

➡ ➡ ➡ दिनचर्या में बदलाव को मन resist करता है

- हमारे मन को कम बाधाओं वाला सहज, सरल मार्ग चाहिए
 - जो करना है वो आज करना है, अभी करना है

➡ ➡ ➡ बचपन की निशानी

- करेंगे सोचेंगे, जिन अक्षरों में पिछाड़ी में 'ग-ग' आता है

- बाबा को ग, ग की भाषा अच्छी नहीं लगती
- स्वयं स्वयं को हुल्लास में रखना- पुरुषार्थ की निशानी है
- पुरुषार्थ, ज्ञान, मधुबन और मुरली के प्रति हमारी भावनाएं कम

ना हो

- जिज्ञासा कम हो तो उमंग चला जाता है
- छोटे बच्चे की तरह जिज्ञासा रखनी है.. जानने की जिज्ञासा कभी कम ना हो

» _ » श्रेष्ठ पुरुषार्थ में थकावट आना आलस्य की निशानी है

- पुरुषार्थ साधारण रफ्तार में हो जाता है, कोई उमंग नहीं
- कोई विघ्न नहीं है लेकिन लगन भी श्रेष्ठ नहीं है वो भी आलस्य है
- ज्ञान का मनन, चिन्तन बढ़ाना है

» _ » आलस्य क्या-क्या करेगा :-

- धीरे धीरे पहले साधारण पुरुषार्थी बना देगा
- बाबा की समीपता से दूर कर देगा
- फिर दूर करते करते धोखा देगा, कमजोर, निर्बल बना देगा
- फिर अकेला कर वार कर देगा
- निर्बल वा कमजोर बनने से कमियों की प्रवेशता शुरू हो जाती है
- श्रीमत की गहराई, स्वयं का अनुशासन कम हो जाता है

» _ » माया से बचने क्या करना है:-

- अपनी बुद्धि की लगन बाप से दूर नहीं करना है
- अपने अन्दर बाप के गुण गाने हैं, महिमा करनी है
- सर्वशक्तियों को काम में लाना है
- स्वमान में रहना -

- हम अनेक बार के विजयी हैं, विजयी बनकर दिखायेंगे

